📘 सत्रीय कार्य (Sessional Work)

विषय: सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation - CCE)

पाठ्यक्रम: बी.एड / डी.एल.एड

विषय कोड: शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन

छात्र का नाम: _____

प्रशिक्षक का नाम: _____

संस्थान का नाम: _____

🏫 भूमिका (Introduction)

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं,
बल्कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है।
इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए **सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation)**
का विचार प्रस्तुत किया गया।

CCE एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थियों के **शैक्षणिक (Academic)**
तथा **गैर-शैक्षणिक (Co-curricular)** दोनों पहलुओं का मूल्यांकन किया जाता है।
यह मूल्यांकन पूरे सत्र के दौरान चलता रहता है और विद्यार्थियों के
समग्र व्यक्तित्व विकास पर केंद्रित होता है।

📖 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of CCE)

"सतत्" का अर्थ है — निरंतर चलने वाली प्रक्रिया,
जबकि **"व्यापक"** का अर्थ है — सभी आयामों को समाहित करने वाला।

अतः सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ है —

> "विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ उनके सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और रचनात्मक विकास का निरंतर एवं समग्र मूल्यांकन।"

परिभाषा:
एनसीएफ 2005 के अनुसार —

> 'CCE is a process of school-based evaluation of a student that covers all aspects of a student's development."

🎯 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य (Objectives of CCE)

1. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना।

2. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाना।

3. विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और आत्ममूल्यांकन की भावना विकसित करना।

4. निरंतर प्रतिक्रिया के माध्यम से शिक्षण में सुधार करना।

5. अंकों के दबाव को कम कर विद्यार्थियों में सीखने की रुचि बढ़ाना।

🧩 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता (Need of CCE)

1. पारंपरिक परीक्षा प्रणाली में केवल ज्ञान का मूल्यांकन होता था,
   जबकि व्यक्तित्व के अन्य पक्षों की उपेक्षा होती थी।

2. विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने के लिए निरंतर मूल्यांकन आवश्यक है।

3. यह शिक्षकों को विद्यार्थियों की कमियों को समय पर पहचानने में मदद करता है।

4. शिक्षा को अधिक मानवीय, लचीला और प्रेरक बनाता है।

5. विद्यार्थियों के तनाव को कम करता है।

🧠 CCE के प्रमुख घटक (Major Components of CCE)

1. सतत् मूल्यांकन (Continuous Evaluation)

यह मूल्यांकन पूरे सत्र के दौरान नियमित अंतराल पर किया जाता है।
इससे शिक्षक को विद्यार्थियों की प्रगति का लगातार पता चलता रहता है।

उदाहरण:
मासिक परीक्षा, मौखिक प्रश्न, गृहकार्य, परियोजना कार्य, सहभागिता आदि।

---

2. व्यापक मूल्यांकन (Comprehensive Evaluation)

इसमें विद्यार्थी के समग्र व्यक्तित्व — जैसे
बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और रचनात्मक पहलुओं का मूल्यांकन किया जाता है।

उदाहरण:

कक्षा में व्यवहार, समूह कार्य, खेल-कूद, कला गतिविधियाँ, जिम्मेदारी आदि।

🗒️ CCE के अंतर्गत मूल्यांकन के क्षेत्र (Areas of Evaluation)

क्षेत्र	विवरण
संज्ञानात्मक (Cognitive)	ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण आदि से संबंधित
भावात्मक (Affective)	रुचि, दृष्टिकोण, सहयोग, अनुशासन आदि
क्रियात्मक (Psychomotor)	कौशल, प्रयोग, कला, शारीरिक क्रियाएँ

🔍 CCE की विशेषताएँ (Features of CCE)

1. यह विद्यार्थी-केंद्रित और गतिविधि-आधारित है।

2. यह निरंतर और नियमित मूल्यांकन की प्रक्रिया है।

3. विद्यार्थियों की कमियों का समय पर निदान किया जाता है।

4. मूल्यांकन में शिक्षक और विद्यार्थी दोनों की सक्रिय भागीदारी होती है।

5. शिक्षा के सभी आयामों — बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक — को सम्मिलित करता है।

📊 CCE के लाभ (Advantages of CCE)

1. विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करता है।

2. परीक्षा के भय और तनाव को कम करता है।

3. विद्यार्थियों में आत्ममूल्यांकन और आत्मविश्वास बढ़ाता है।

4. शिक्षण को रोचक और सार्थक बनाता है।

5. शिक्षक को त्वरित प्रतिक्रिया (feedback) प्राप्त होती है।

⚠️ CCE की सीमाएँ (Limitations of CCE)

1. शिक्षक पर कार्यभार बढ़ जाता है।

2. मूल्यांकन में पक्षपात की संभावना रहती है।

3. प्रत्येक गतिविधि का सही आकलन करना कठिन होता है।

4. कुछ विद्यालयों में आवश्यक संसाधनों की कमी होती है।

5. मूल्यांकन के मानदंडों की एकरूपता नहीं होती।

🏁 निष्कर्ष (Conclusion)

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) शिक्षा प्रणाली का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है,
जो विद्यार्थियों के समग्र विकास की दिशा में एक बड़ा कदम है।
यह केवल परीक्षा परिणाम तक सीमित नहीं, बल्कि सीखने की निरंतर प्रक्रिया है।
यदि विद्यालय और शिक्षक इस प्रणाली को सही प्रकार से अपनाएँ,
तो यह भारतीय शिक्षा को अधिक **मानवीय, व्यावहारिक और प्रभावी** बना सकता है।

📚 संदर्भ (References)

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-2005)

2. एनसीईआरटी – शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन

3. डॉ. एस.के. मंगल – *शैक्षिक मनोविज्ञान*

4. बी.एड अध्ययन सामग्री – इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

🔗 **हमसे जुड़ें:**

👉 **Telegram Channel:** RLK Classes

🌐 **Website:** www.rlkclasses.in

📘 सत्रीय कार्य (Sessional Work)

विषय: पोर्टफोलियो द्वारा व्यक्ति का आकलन

पाठ्यक्रम: बी.एड / डी.एल.एड

विषय कोड: शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन

छात्र का नाम: _____

प्रशिक्षक का नाम: _____

संस्थान का नाम: _____

🏫 भूमिका (Introduction)

शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की उपलब्धियों और क्षमताओं का सही मूल्यांकन करने के लिए केवल परीक्षा पर्याप्त नहीं है।

आधुनिक मूल्यांकन प्रणाली में ऐसे उपायों की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों के **ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, व्यवहार और रचनात्मकता** का समग्र रूप से आकलन करें।

इसी उद्देश्य से **पोर्टफोलियो मूल्यांकन (Portfolio Assessment)** की अवधारणा विकसित हुई।

पोर्टफोलियो एक ऐसी **संग्रह फ़ाइल (Collection File)** है जिसमें विद्यार्थी की शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ी उपलब्धियाँ, कार्य, परियोजनाएँ, अनुभव और आत्ममूल्यांकन संकलित होते हैं।
यह विद्यार्थियों के *समग्र विकास* का साक्ष्य प्रस्तुत करता है और शिक्षक को उनके प्रदर्शन की वास्तविक तस्वीर प्रदान करता है।

📖 पोर्टफोलियो का अर्थ (Meaning of Portfolio)

"Portfolio" शब्द लैटिन शब्दों *Portare* (अर्थात् ले जाना) और *Folio* (अर्थात् पन्ना) से मिलकर बना है।
शिक्षा में यह विद्यार्थियों की प्रगति और सीखने के प्रमाणों का एक संगठित संग्रह है।

सरल शब्दों में:

> "पोर्टफोलियो वह फ़ाइल है जिसमें विद्यार्थी के सीखने, रचनात्मकता, प्रदर्शन और विकास से संबंधित सभी साक्ष्य (Evidence) संकलित होते हैं।"

परिभाषा:
पॉलसन, पॉलसन एवं मेयर (1991) के अनुसार —

> "A portfolio is a purposeful collection of student work that exhibits the student's efforts, progress, and achievements in one or more areas."

अर्थात् —
"पोर्टफोलियो विद्यार्थी के कार्यों का उद्देश्यपूर्ण संग्रह है, जो उसके प्रयासों, प्रगति और उपलब्धियों को प्रदर्शित करता है।"

🎯 पोर्टफोलियो मूल्यांकन के उद्देश्य (Objectives of Portfolio Assessment)

1. विद्यार्थियों की प्रगति का सतत् एवं समग्र मूल्यांकन करना।

2. विद्यार्थियों में आत्ममूल्यांकन की भावना उत्पन्न करना।

3. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में निरंतर सुधार लाना।

4. विद्यार्थियों की रचनात्मकता, मौलिकता और व्यक्तित्व विकास को समझना।

5. शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक — तीनों को वास्तविक प्रदर्शन से अवगत कराना।

🧩 पोर्टफोलियो की विशेषताएँ (Characteristics of Portfolio)

1. यह विद्यार्थी-केंद्रित और रचनात्मक प्रक्रिया है।

2. इसमें शिक्षण की निरंतर प्रक्रिया दिखाई देती है।

3. यह केवल अंक नहीं बल्कि अधिगम यात्रा का चित्र प्रस्तुत करता है।

4. यह आत्मचिंतन और आत्ममूल्यांकन को बढ़ावा देता है।

5. पोर्टफोलियो व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखता है।

📚 पोर्टफोलियो के प्रकार (Types of Portfolio)

1. प्रदर्शन पोर्टफोलियो (Showcase Portfolio)

इसमें विद्यार्थी अपने सर्वश्रेष्ठ कार्यों को प्रदर्शित करता है।
यह उसकी प्रतिभा, कौशल और उपलब्धियों का प्रमाण होता है।

2. कार्यशील पोर्टफोलियो (Working Portfolio)

इसमें विद्यार्थी के अधिगम की प्रक्रिया और प्रगति के विभिन्न चरणों को दिखाया जाता है।
शिक्षक इसके आधार पर निरंतर फीडबैक देता है।

3. मूल्यांकन पोर्टफोलियो (Assessment Portfolio)

यह विद्यार्थियों की उपलब्धियों के मूल्यांकन के लिए बनाया जाता है।
इसमें शिक्षण उद्देश्यों के अनुरूप कार्यों का चयन किया जाता है।

🧾 पोर्टफोलियो की सामग्री (Contents of a Portfolio)

एक शिक्षण पोर्टफोलियो में निम्नलिखित सामग्री सम्मिलित हो सकती है —

1. विद्यार्थी की प्रोफाइल (नाम, कक्षा, रोल नंबर आदि)

2. सत्र के दौरान किए गए असाइनमेंट

3. प्रोजेक्ट कार्य और प्रयोगात्मक रिपोर्ट

4. आरेख, चार्ट, चित्र, लेख या कविता

5. शिक्षक द्वारा दी गई टिप्पणियाँ और प्रतिक्रिया

6. विद्यार्थी का आत्ममूल्यांकन

7. सहपाठियों के सुझाव या मूल्यांकन

8. कक्षा में प्रदर्शन का सारांश

🔍 पोर्टफोलियो द्वारा मूल्यांकन की प्रक्रिया (Process of Portfolio Evaluation)

1. उद्देश्य निर्धारण (Setting Objectives)

सबसे पहले यह तय किया जाता है कि पोर्टफोलियो का उपयोग किस उद्देश्य के लिए किया जा रहा है —
जैसे प्रगति मापन, कौशल मूल्यांकन या रचनात्मकता मापन।

2. सामग्री चयन (Selection of Content)

विद्यार्थी और शिक्षक मिलकर यह तय करते हैं कि पोर्टफोलियो में कौन से कार्य और साक्ष्य शामिल किए जाएंगे।

3. संगठन (Organization)

सभी सामग्री को व्यवस्थित रूप से कालानुक्रमिक (chronological) क्रम में रखा जाता है।

4. मूल्यांकन (Assessment)

शिक्षक निर्धारित मानदंडों के अनुसार पोर्टफोलियो की समीक्षा करता है और विद्यार्थियों को फीडबैक देता है।

5. चिंतन एवं सुधार (Reflection and Improvement)

विद्यार्थी अपनी सीख पर विचार करता है और भविष्य में सुधार हेतु कदम उठाता है।

📊 पोर्टफोलियो मूल्यांकन के लाभ (Advantages of Portfolio Assessment)

1. यह विद्यार्थियों की वास्तविक प्रगति को दर्शाता है।
2. आत्ममूल्यांकन और आत्मचिंतन की भावना विकसित होती है।
3. परीक्षा के तनाव को कम करता है।
4. शिक्षण को रचनात्मक और छात्र-केंद्रित बनाता है।
5. शिक्षक को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं का सटीक चित्र प्राप्त होता है।

⚠️ पोर्टफोलियो मूल्यांकन की सीमाएँ (Limitations of Portfolio Assessment)

1. यह समय-साध्य प्रक्रिया है।

2. शिक्षक पर कार्यभार बढ़ जाता है।

3. मूल्यांकन के मानदंडों का अभाव हो सकता है।

4. कभी-कभी विद्यार्थी बाहरी सहायता से कार्य कर लेते हैं।

5. सभी विद्यार्थियों के लिए समान मानदंड बनाना कठिन होता है।

🏁 निष्कर्ष (Conclusion)

पोर्टफोलियो मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों के सीखने, रचनात्मकता और आत्मविकास को साक्ष्य रूप में प्रस्तुत करती है।
यह पारंपरिक परीक्षा प्रणाली की सीमाओं को दूर करता है और विद्यार्थियों के **समग्र मूल्यांकन (Comprehensive Evaluation)** का मार्ग प्रशस्त करता है।
यदि शिक्षक इसे सही दिशा में अपनाएँ, तो यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, वैज्ञानिक और मानवीय बना सकता है।

📚 संदर्भ (References)

1. एनसीईआरटी – *शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन*

2. एनसीएफ 2005 – *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा*

3. एस.के. मंगल – *शैक्षिक मनोविज्ञान*

4. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय – *बी.एड अध्ययन सामग्री*

🔗 **हमसे जुड़ें:**

👉 **Telegram Channel:** [RLK Classes]

🌐 **Website:** [www.rlkclasses.in]